

THE SCINDIA SCHOOL, FORT GWALIOR

REVIEW-21



WEDNESDAY, 1 DECEMBER 2021 | WPP : REGN.NO.GWL.DN.11

FORT NEWS

The knock of the Winters can be felt on the Fort. There is a chill in the air in the mornings and late evenings. The student community is busy preparing for the December Examination. For Classes X and XII the Term I Exam will be the Board Examination which is going to be conducted twice this year. The teachers have been busy giving the Board students utmost time and attention making them stretch themselves to the fullest of their potential. Class X and XII have finished with their Board Practicals for Term I. The evening classes targeted the specific learning groups in classes X and XII, intensifying their academic endeavours, sharpening their focus and skills.

Shirish Mehra and Jeh Neville Hilluwala participated in Basantar Memorial Virtual Inter-School Declamation organized by the Lawrence School, Sanawar. The contest was held virtually on 10 November 2021. Out of 18 reputed schools of the country, the school team secured the third place.

Shaurya Prakash, Ayushmaan Rai, Siddharth Gupta, Shirish Mehra, Aaditya Prakash Singh, Akkash Pratap Singh, Raghav Mahajan, Ritansh Varshney, Brahm Motwani, Ayush Jain, Shaurya Chirania, Keshav Jhunjhunwala and Sameep Mody participated in Odyssey 2021, the Inter School Cultural Fest organized by Sanskriti, The Gurukul, Guwahati, Assam from 11 November to 13 November 2021. Logo Designing, Sculpture Making from E-Waste were the activities in the Art Section. In the Science activities, the judges were very impressed with the Presentation and Practical Model constructed in Nirmaan (Special Bridge With the help of Ice Cream Scoop) as the bridge was able to handle a weight of 27 kg for two minutes with the help of 120 scoops. Four students received the collaboration Certificates for Best Innovation and Presentation- **Ayush Jain** and **Shaurya Chirania** for 'One - Bio Care Competition' and **Keshav Jhunjhunwala** and **Sameep Mody** for the 'Nirmaan' Competition.



Sculpture Making

The school bid farewell to Mr Ashish Arora, Faculty in Commerce. Mr Ashish Arora joined the school on 8 June 2017 as the teacher of Business Studies. We wish him all the very best for his future endeavours!

Seven students participated in the Indian Classical Vocal Solo Swaranjali IPSC Music Fest 2021 organized by Rajkumar College Raipur from 11 November to 13 November 2021 and were applauded for their exemplary performance : **Jeh Neville Hilluwala** - Eminently Notable Performance in Western Instrumental Solo; **Vasant Bhat** - Spotlight Award in Indian Classical Vocal Solo; **Prithvee Rajswaroop Pathak** - Spotlight Award in Light Semi Classical Vocal; **Saransh Agarwal** - Spotlight Award in Indian Percussion (Tabla) Solo; **Krrish Lokwani** - Excellence in Western Percussion (Drum) Solo; **Krrishn Leelotpal Divya** and **Nishant Saxena** - Special Mention in Indian Semi-Classical Instrumental Jugalbandi.

The Doon school conducted an online debate - The 4th Annual Junior English Debating Invitational Cup, 2021 from 31 October to 2 November 2021 for classes VI to IX. The debates were held in the World Schools' Debating Format. Simarjot Malhi, Mahiman Vikamsey and Lokesh Awasthi participated in the virtual competition.

Mayank Chaudhary, Shaurya Prakash, Arnav Joshi, Neev Agarwal, Paawan Agarwal, Harshwardhan Himanshu Wadher, Vivek Singh and Nimit Agarwal attended the Military History Seminar on 29 October 2021.

Dr N K Gupta, Ex Deputy Director & Project Director (Cryogenics), LPSC/ISRO visited the School and addressed the students of class IX and XI. Mr I A Zaidi, District Nodal Officer, School Education, Gwalior also visited the school.



Dr NK Gupta and Mr IA Zaidi

Parv Rajesh and Utkarsh Gupta participated in the Acropolis 2021 Student Knowledge Summit, Multi Format English Debates organized by the Mount Litera Zee School, Amritsar on 16 and 17 October 2021.

Ansh Garg qualified for the Finals of the 8th Nanhi Chhaan National School Essay Contest, 2021 amongst participants from many prestigious schools across India. He participated in the the two rounds of Nanhi Chhaan Essay Writing Competition online from 26 to 27 October 2021. The Chief Guest for the occasion was Mr Jyotiraditya Scindia (Union Minister of Civil Aviation & M.P.) and the judge panelist's for the final round being Ms Sonia Singh - NDTV, Ms Meher Pudumjee - Thermax, Mr Arun Waklu - Pragati Leadership and Mr R. Pawar - NIIT. He was awarded with a smartwatch and an invitation to visit the NIIT Campus at Neemrana.

Seven students participated in the Maharani Gayatri Devi Model United Nations' Conference from 21 October to 23 October 2021. The following students won awards in various categories: Best Delegate - **Ayushman Rai** (China, UNOOSA); High Commendation - **Parv Agarwal** (UAE, Arab League); Verbal Mention - **Siddharth Gupta** (China, UNSC); Verbal Mention - **Ahana Bhattacharya** (India, FCC); and Verbal Mention - **Tanish Agarwal** (France, UNHRC).

Shaurya Prakash successfully completed the course 'Ruskin Bond Teaches Writing' from unuclass. He also completed an online non-credit course authorised by University of London and offered through Coursera called 'Citizenship and the Rule of Law'.

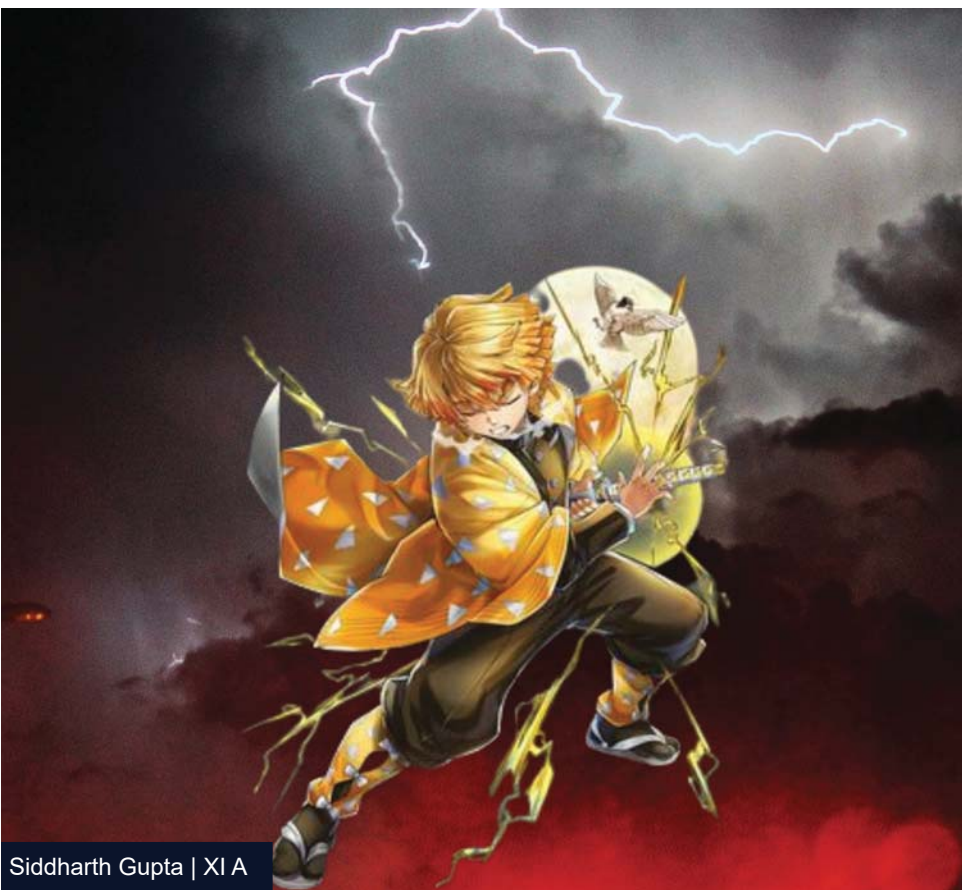
Paintings and Commercial Art



Manan Gupta | VIII B



Yuvraj Jain | X B



Siddharth Gupta | XI A

लड़का हूँ मैं क्या करूँ ?

अंश गर्ग | कक्षा 10 ए

इन अंधेरी रातों के सन्नाहों में,
गूँजती है मेरी आत्मा।
कहती - क्यूँ भागता नहीं सपनों के पीछे,
आज़ादी तेरी राह है देखे।

भोली सी चंचल-सी तू है,
कैसे समझाऊँ तुझे इस समाज की जंजीरों।
लड़का हूँ मैं क्या करूँ ?
बना हूँ इसी जंजीर के लोहे से।

लोग आते-जाते, लोहा परख के जाते
मोड़ते, ललकारते, गर्माते, तड़पाते।
परंतु लड़का हूँ मैं क्या करूँ ?
मदद मैं किसी से माँग न सकूँ

बचपन में पाला, पुचकारा,
रोने पर समाज ने नकारा,

यह सब क्यूँ किया मैं समझ नहीं पाया।
बड़ा हुआ तो पर्दा हटा,
उम्मीदों की माला से दम घुटा।।
सोच में पड़ा रहता हूँ प्रतिघंटा।
परंतु लड़का हूँ मैं क्या करूँ ?
सख्ती को मैं खो न सकूँ।

बस इतना चाहता हूँ,
मेरा इकलौता सपना साकार हो किसी दिन।
माँ-बाप के आँखों में
खुशी के आँसू नज़र आएँ किसी दिन।
समाज से मैं ऊपर उठूँ
और दिखाऊँ इन जंजीरों की असफलता।
आज़ाद परिंदा हूँ न रोक सके
मुझे किसी समाज की कठोरता।।

Photoplay 2

What is the location of this monument on the Fort? Do you know about its importance? Kudos to you if you did! Well, we will share the details of this photograph in our next regular edition.



Obituary

With profound grief we inform you of the death of Ms Usha Srivastava, Ex- Matron of Jankoji House. She left for her heavenly abode on 13 November 2021. The cremation was held on 14 November 2021 at Lodhi Road, New Delhi. May her kind soul rest in everlasting peace. Contact details: Sumira Nath- +91 9811345270; Meera Nair +91 8447702819.



वह यादगार सफ़र

धर्मेन्द्र सिंह | कक्षा 10 डी

एक बार मेरे पिताजी के मित्र ने हमारे पूरे परिवार को धार्मिक यात्रा के लिए आमंत्रित किया। जगह का नाम था कुगती, यह नाम पहली बार सुना और हैरानी हुई कि यह कौन-सी जगह है। जिज्ञासावश यात्रा प्रारंभ की। शिमला से मंडी पहुँचे और फिर मंडी से चंबा, यहीं पर रात्रि-विश्राम किया। सुबह सूर्य की पहली किरण के साथ आगे की यात्रा प्रारंभ हुई। पहाड़ों के साथ-साथ चलते हुए हमने दोपहर को भरमौर पहुँचकर भोजन किया। यहीं से कुगती की यात्रा प्रारंभ हुई कुछ किलोमीटर के बाद एक रास्ता मणिमहेश को जाता है जो सोलह किलोमीटर का ट्रैक है वहाँ से प्राकृतिक नज़ारा देखते हुए धीरे-धीरे हम आगे बढ़ रहे थे। कच्चा और पथरीला रास्ता, चारों ओर हरियाली, पहाड़ की चोटियों पर बर्फ, साथ में चलती हुई नदी और पानी का शोर, पंछियों की चहचहाहट से वातावरण आनंदमय हो गया था। ठंडी- ठंडी हवा भी चल रही थी इससे हमारा शरीर ठिठुर रहा था। हम लोग लगभग सात हज़ार फीट की ऊँचाई पर पहुँच गए थे। कुगती पहुँचने से दो किलोमीटर पहले हमने गाड़ी छोड़कर पैदल चलना शुरू कर दिया था। कुछ समय बाद हम लोग फॉरेस्ट गेस्ट हाउस पर पहुँचे जहाँ पर चाय और थोड़ा नाश्ता करके हम लोग ट्रैक शुरू करने के लिए तैयार हो चुके थे। वहाँ पर ठंड से बचने के लिए हमने मोटे जैकेट और जूते पहने। जिसका इंतज़ाम सरकारी ट्रैक ऑपरेटर ने ही किया था। अब हम यात्रा के लिए पूरी तरह से तैयार थे। हमारी यात्रा शाम चार बजे प्रारंभ हुई। अब हमें चार किलोमीटर जाना था। हम सब दस लोग थे सभी बातचीत करते हुए आगे बढ़ रहे थे। हमारे साथ और छह लोग भी थे जो हमारी इस यात्रा को सफल बनाने के लिए हमारे साथ मार्गदर्शक के रूप में थे।

हम सभी लोग ट्रेकिंग के सभी सामान जैसे टॉर्च, रस्सी और स्टिक आदि से लैस थे क्योंकि इनकी हमें बहुत अधिक आवश्यकता पड़ने वाली थी। यह क्षेत्र वन्यजीव अभयारण्य भी घोषित है। इस जंगल में तरह-तरह के जानवर रहते हैं जिसका ध्यान देते हुए चलना था क्योंकि यहाँ जंगली जानवरों का भी डर था। यहाँ रास्ता बहुत सँकरा था जिसमें एक तरफ पहाड़ थे तो दूसरी तरफ खाई थी। जैसे ही इनसे ध्यान हटता तो कोई और दुर्घटना हो सकती थी इसलिए गाइड बार-बार निर्देश दे रहे थे कि सब लोग बहुत ध्यान लगा कर एक-एक पैर आगे बढ़ाएँ। प्रकृति का नज़ारा इतना खूबसूरत था जिसको शब्दों के द्वारा बयान करना कठिन है जो सिर्फ अनुभव किया जा सकता है। धीरे-धीरे हम अपनी मंज़िल की ओर बढ़ रहे थे, तरह-तरह के पेड़ देखते और झरनों का मीठा पानी पीते हुए हम आगे बढ़ते गए। चार से पाँच घंटे की आनंदमय तकलीफ और थकान वाली यात्रा ने हमें हमारी मंज़िल पर पहुँचा दिया। वहाँ पहुँचकर जो नज़ारा देखने को मिला उसने हमारी सारी थकान मिटा दी। चारों तरफ के पहाड़ कैलाश की चोटियों जैसे बर्फ से ढँके हुए थे जो चाँद की रोशनी से चाँदी की तरह चमक रही थी। भाँति-भाँति के जानवरों की आवाज़ें, पानी का शोर, शरीर को कँपकँपा देने वाली वाली सर्द हवा के होते हुए भी हमें अत्यंत आनंद का अनुभव हो रहा था। हमें कुछ देर के बाद वापस बेस कैम्प पहुँचना था, वहाँ से भगवान शिव के पुत्र कार्तिक जी के मंदिर भी जाना था। हम निश्चित समय पर बेसकैम्प पहुँच गए थे। उसके बाद हम सब लोग कार्तिक जी का मंदिर देखने के लिए पहुँचे। यह मंदिर बहुत ही सुंदर और मनोरम था। थोड़ी देर हम वहाँ रहे और फिर वापस अपने बेस कैम्प लौट आए। आज हम सब लोग काफी थक चुके थे लेकिन मन के आनंद ने उस थकान को कम कर दिया था। सचमुच आज का दिन बहुत ही अच्छा बीता और रात में भोजन करने के बाद नींद भी बहुत अच्छी आई। सोते-सोते मैं उन रास्तों की सुंदरता के बारे में सोच रहा था और तब मुझे याद आया कि कहा भी जाता है कि मंज़िल से अधिक सुंदर, मंज़िल तक पहुँचने का रास्ता होता है।

अखिल भारतीय ऑनलाइन हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता – 2021

‘हिंदी टेक’ व ‘ग्रीन अर्थ प्रकाशन, कोलकाता’ की ओर से 14 नवंबर 2021 को बाल-दिवस के दिन एक अखिल भारतीय हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें भारत के विभिन्न विद्यालयों से आए छात्रों ने भाग लिया। सिंधिया स्कूल की ओर से प्रथम चक्र में कक्षा ग्यारहवीं के छात्र रिदम अरोड़ा तथा कक्षा नौ के तनीश अग्रवाल, यशवर्धन वढ़ेर, गर्व हरकुट तथा रोहन असरानी ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। इनमें से तनीश अग्रवाल व यशवर्धन वढ़ेर

ने अंतिम चक्र में प्रवेश किया। दोनों प्रतियोगियों ने बहुत ही धैर्य से प्रश्नों के उत्तर दिए और जहाँ यशवर्धन वढ़ेर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया वहीं तनीश अग्रवाल इस प्रतियोगिता में तृतीय स्थान पर रहे। दोनों प्रतियोगियों को उपहार स्वरूप ‘पेन ड्राइव’ भेंट की गई। प्रतियोगिता का सफल संचालन हिंदी टेक के संपादक श्री सौमित्र कुमार जयसवाल ने किया।

Answer to Photoplay 1 asked in Review of 1 October 2021

Chaturbuj is a Hindu temple excavated in a rock face in the Gwalior Fort, in c875 AD, by Alla, the son of Vaillabhata, and the grandson of Nagarabhata of the Gurjara-Pratihara dynasty, in present-day Madhya Pradesh.

One of the temple's inscriptions contains the earliest known inscription of the circular symbol "0", to represent zero, in India, though the Bakhshali manuscript is regarded as the earliest existent use of zero. The inscription states, among other things, that the community planted a garden of 187 hastas by 270 hastas (1 hasta = 1.5 feet), that the garden yielded 50 garlands for the temple everyday. The last digits of 270 and 50 are "0" shaped. While Indian and non-Indian texts mention zero much earlier, this temple has the earliest known epigraphical evidence inscribed in stone that already knows and uses the concept of zero.

It is a relatively small temple with a square plan of 12 feet (3.7 m) side. The temple has a portico at its entrance supported by four carved pillars. The tower (Shikhara) of the temple is North Indian Nagara style, that slowly curves with a square plan, all carved out of the monolithic rock. It has an inscription that opens with a praise for Vishnu (Vaishnavism), then Shiva (Shaivism) and nine Durgas (Shaktism), as well states that it was excavated in 876 CE (Samvat 933). Inside there is a wall relief of Varaha (Vishnu's man-boar avatar) and another of four armed Vishnu. It also a carving of goddess Lakshmi with four arms. The name of the temple may be derived from four armed Vishnu and Lakshmi.





How Compassion can Heal Humanity and the Planet

Ansh Garg | X A

(This article was selected in the Nanhi Chaan Contest)

Nelson Mandela once said, 'Love comes more naturally to the human heart than hate. If people can learn to hate they must be taught to love.'

Humanity is a strong force that binds the yarns of love, compassion, laughter, care, beauty, grace as well as yarns of lust, envy, anger, sadness and jealousy into a beautiful and smooth velvet fabric. I am as much human, as the person who walked by me on the street today. This is because we wrap ourselves in that same velvet fabric of humanity. This fabric I speak of is on the verge of getting shredded into a thousand pieces. Humanity and our planet, have been constantly decaying since the beginning of time. If I am wrong then what are the holocaust, climate change, gender discrimination, poverty, pollution and wars examples of? These are all instances or issues where the world has seen its worst unfold.

The decaying of humanity and our planet can only be healed if we come together and solve this issue. It is impractical to think about healing humanity for oneself. Humanity can only be healed for everyone. This directly implies that we incorporate selfless love, empathy, compassion and a sense of collective belonging. There is a very beautiful quote by the great Dalai Lama which spotlights my argument here. It says, 'The planet does not need more successful people, it desperately needs more peacemakers, healers, restorers, storytellers and lovers of all kinds.' The peacemakers and lovers are the ones which spread love and compassion. We hear that love makes a person blind and do crazy things just to save the loved one. What would happen if people loved humanity and the planet? What we achieve by this is a world where hate or suffering doesn't exist. Seeing what compassion can achieve is marvellous. Nelson Mandela was able to overturn Apartheid (White supremacy over blacks in South Africa) because he was compassionate towards his community. He considered the struggles of the community his own.

Let's talk about poverty in India. I take pride in the fact that my country has the 7th highest GDP in the world. India has a 3.28% share of world GDP. Despite this, the poverty rates in India remain to be one of the highest in the world. The top 1 per cent of India's population earned 21% of India's national income in the year 2019 whereas the top 10% earned 56%. This is not acceptable at all. There's not a single crossroad in India where we don't see beggars. It's very hard to say but we must face the truth that despite being a socialist country, the top 10 per cent of India's population is clearly insensitive or indifferent towards the whole population. The point I wish to draw here is that compassion by this top 10 per cent of India can be life-changing for the other 90 per cent and we might even be able to achieve the actual GDP per capita of \$2000 in India and eliminate economic disparities.

Compassionate sentiments are the way to move forward even in the environmental sphere. When I say pollution, the first thing that comes to your mind is harm to forests, wildlife or nature in essence. This very pollution is

rampant only because of industrialisation which is based upon capitalist regimes. Here, just for the profit of a single affluent and indifferent person, the harm to mother nature is neglected which eventually results in the loss of thousands. More so, we must understand that we share this planet with other majestic creatures and feel compassion towards them. Just because these animals cannot communicate with us, doesn't mean that we can exploit them. Even if we do utilize their resources, the utilization must be sustainable, else it will only result in disturbances in our ecosystem.

However, the idea of compassion healing humanity and the planet has not come into existence just now. The Bhoodan movement or the Bloodless revolution which was initiated in 1951 had exactly the compassionate sentiments, that the world needs today. Launched by Vinoba Bhave, the spiritual heir of Mahatma Gandhi, the movement involved voluntary land property transfer from wealthy landowners to landless farmers. The first thought that popped up in my mind after hearing this was that there must be some strings attached. Apparently, there was one: Compassion and humanity! There is not a better example of what this essay focuses on. Just think about how good it would be if racial, sexual or caste discrimination were to be annihilated because people started giving acceptance to every minority by considering them their own. This is utopia!

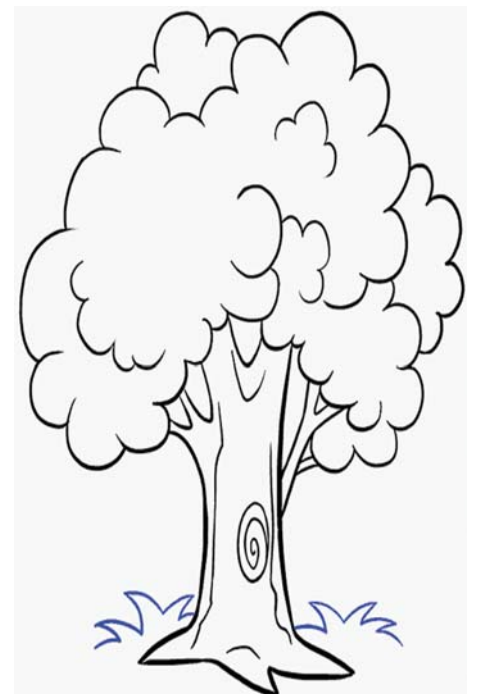
We have learnt how and why the world needs compassion for the greater good, what humanity is and what all does it face today, how compassionate sentiments have evolved and prevailed, how they are effective in today's world. All in all, the world needs a better place. It needs to change into an empathetic and compassionate world, where a person is guaranteed socio-economic security, where a person feels at home. Given below is a small poem concluding the essay :

The beautiful velvet of sheer goodwill and love
Is what maintains a race peaceful as a dove
So why shall we let it be torn by a million offenders,
When all we need is a lover.

Trees

Aditya Singh Gurjar | VIII A

I think that I shall never see
A form so lovely as a tree
A tree whose hungry mouth is pressed
Against the earth's sweet flowing breast
A tree that looks at God all Day
And lifts her leafy arms to pray
A tree that may in summer wear
A nest of robins in her hair
Upon whose bosom snow has lain
Who infinitely lives with the rain
Poems are made by fools like me
But only God can make a tree.



EDITORIAL BOARD



Published by : The Principal, The Scindia School, Fort, Gwalior
Staff Editors : Dr Smita Trivedi (English) and Mr Manoj Mishra(Hindi)
Senior Editor : Shirish Mehra
Chief Creative Editor : Prashast Pandey
Art Editor : Raghav Mahajan
Correspondents : Amrit Singh, Anubhav Sachan

Web Support : Mr Raj Kumar Kapoor
Photography : Mr Kamlesh Singh
Technical Support : Mr Jitendra Jawale
Printed by : Galaxy Printers, Gwalior
URL : www.scindia.edu
OLD BOYS' SITE : www.scindia.edu/alumni
DECEMBER 1, 2021 | WPP : Regn.No.Gwl.Dn.11
Feedback : smitat@scindia.edu
Price : Re. 1

If undelivered, please return to : The Scindia School, Fort, Gwalior - 474 008 (M.P.)